



## डिजिटल युग में बालकों के व्यक्तित्व पर तकनीकी का प्रभाव

विनोद कुमार सैनी, पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षा विभाग  
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

### ORIGINAL ARTICLE



#### Author

विनोद कुमार सैनी, पीएच.डी. शोधार्थी  
E-mail : vinod.saini42@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/12/2024  
Revised on : 19/02/2025  
Accepted on : 28/02/2025  
Overall Similarity : 00% on 20/02/2025



Date: Feb 28, 2025 05:13 PM  
Matches: 5 / 2714 words  
Source: I  
Remarks: No matches found.  
Your document looks healthy.  
Verify Report:  
Scan this QR Code

### शोध सार

आज कल बच्चों में आधुनिक तकनीकी उपकरणों जैसे-टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल फोन, वीडियोगैम, सोशल नेटवर्किंग साइट आदि के प्रयोग की अधिक प्रवृत्ति पाई जाती है। वे सामान्यतया विभिन्न उपकरणों के साथ सदैव जुड़े रहते हैं। बच्चों को लगता है कि ये नवीन उपकरण उनके जीवन का एक मुख्य हिस्सा है। इन उपकरणों पर उनकी निर्भरता इतनी अधिक बढ़ गयी है की इनके अभाव में बच्चों के व्यवहार में चिड़-चिड़ापन आने लगता है। वे अपने आप को अकेला और अधूरा सा महसूस करते हैं। इसके कारण अभिभावकों और बच्चों के बीच सम्बन्ध तनावपूर्ण हो जाते हैं। ऐसे बच्चे अपने सामान्य कार्यों को भी पूरी कुशलता के साथ नहीं कर पाते हैं। सामाजिक कार्यों में उनकी उपस्थिति प्रायः नगण्य होती है। उनका विद्यालयीन शिक्षा का स्तर एवं शैक्षिक प्रदर्शन भी ठीक नहीं होता है। इसका प्रमुख कारण यह है की ऐसे बच्चों के माता-पिता भी स्वयं लेपटॉप और कम्प्यूटर पर अधिक समय बिताते हैं। आधुनिक उपकरणों के प्रयोग ने बालकों को अभी से ही कृत्रिम रिश्तों के ताने-बाने में उलझा दिया है। मोबाइल फोन के अत्यधिक प्रयोग ने बालकों में कई तरह की मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। उनकी याददाश्त क्षमता में असर दिखाई देने लगा है। बालक इन प्रवृत्तियों में उलझ कर रह गए हैं। उनमें नकारात्मकता भी बढ़ रही है। जो परिवार व समाज पर विपरीत प्रभाव डाल रही है। कार्टून कार्यक्रमों से बच्चों के मन में भय, घबराहट, असुरक्षा की भावना भी उत्पन्न हो जाती है। इन बच्चों में संवेदनशीलता कम होती है, परन्तु आक्रामक होने की संभावना बढ़ जाती है। बच्चों में मानसिक उत्तेजना, गुस्सा और कुंठा पैदा हो जाती है जिनका असर उन बच्चों के दिमाग पर भी दिखाई देने लगता है। डिजिटल युग ने बालकों के जीवन को कई दृष्टिकोणों से प्रभावित किया है। जहां एक ओर तकनीकी उपकरणों ने शिक्षा,

मनोरंजन, और संवाद के नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर यह बालकों के मानसिक, शारीरिक, और सामाजिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं। अत्याधिक स्क्रीन समय के कारण बच्चों में शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएं, जैसे मोटापा, आंखों की समस्याएं, और शारीरिक गतिविधियों की कमी हो रही हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव जिसमें तनाव, चिंता, अवसाद और आत्ममूल्य की कमी हैं। सामाजिक कौशल में भी बदलाव आया है। डिजिटल युग में तकनीकी का बालकों के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है, और यदि इसका उपयोग संतुलित और जागरूकता के साथ किया जाए, तो इसके सकारात्मक परिणामों को बढ़ाया जा सकता है।

## मुख्य शब्द

डिजिटल युग, बालकों का व्यक्तित्व, तकनीकी उपकरण, स्वास्थ्य, सामाजिक कौशल, शैक्षिक विकास.

## प्रस्तावना

जिस प्रकार संसार में कुछ भी शाश्वत नहीं होता है उसी प्रकार समाज में कुछ भी स्थाई नहीं होता है। समय-समय पर परिस्थितियों में बदलाव आने पर समाज के विभिन्न अंगों व इसके प्रकार्यों में भी परिवर्तन होते रहे हैं। प्रत्येक समाज में कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य आया है, चाहे परिवार विकसित समाज का हो या विकासशील समाज का। आज भारतीय परिवार का वह स्वरूप नहीं दिखाई दे रहा है जो सौ वर्ष पूर्व था। प्राचीन समय से ही भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रथा का चलन रहा है, जिसमें विभिन्न स्वभाव और प्रवृत्ति के लोग एक साथ रहते हैं और उनमें एकता एवं सामंजस्य, अनुशासन और मर्यादा बनाए रखने में परिवार के मुखिया द्वारा मुख्य भूमिका निभाई जाती है। प्राचीन संयुक्त परिवार का आदर्श रूप अब बदलने लगा है। आधुनिक समय में भारतीय समाज और परिवार के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन दिखायी दे रहे हैं। आज परिवार के समक्ष कुछ ऐसी समस्याएं उत्पन्न हो गयी हैं जिनके कारण परिवार के अस्तित्व में अपरिवर्तन आ रहा है। परिवार के सदस्यों के दृष्टिकोण, मूल्यों, विचारों आदि में परिवर्तन आने से संयुक्त परिवार रूपी संस्था का विघटन हो रहा है।

## परिचय

सुख सुविधाओं की उपलब्धता, औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण भारतीय परिवार पर पश्चिमी प्रभाव बढ़ता जा रहा है। नए भूमि कानून, बढ़ती जनसंख्या, गाँवों में यंत्रीकरण एवं मशीनों का प्रवेश, भौतिकवादी जीवन का दबाव, उद्योगीकरण एवं आधुनिक शिक्षा आदि सभी कारणों से भारतीय संयुक्त परिवार का आकार छोटा होता जा रहा है। आज के समय में दो पीढ़ियों का साथ रहना भी मुश्किल हो गया है। परिवार के मुखिया का नेतृत्व कमजोर होता जा रहा है। संयुक्त परिवार अब बहुत ही संशोधित और सीमित होता जा रहा है। उनका स्थान अब एकल परिवार ने ले लिया है। परिवार के सदस्यों में अपना स्वार्थ सर्वोपरि हो गया है। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति करने में लगा है। आधुनिक परिवारों के सदस्यों के बीच तनाव, ईर्ष्या, अमर्यादित व्यवहार और घृणा दिखाई दे रही है। आज नवयुवक व युवतियाँ स्वतंत्र और नियंत्रण मुक्त जीवन की कल्पना करने लगे हैं। उन्हें किसी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं है। संबंधों के मायने बदल रहे हैं और परिवार की मर्यादा टूटती जा रही है जिसके परिणाम स्वरूप परिवार के आपसी संबंधों में एक प्रकार की उदासीनता और अलगाव की भावना पायी जाने लगी है।

## शोध अध्ययन के उद्देश्य

- बच्चों द्वारा आधुनिक तकनीकी उपकरणों के प्रयोग का अध्ययन करना।
- डिजिटल युग में बालकों के व्यक्तित्व पर तकनीकी का प्रभाव का अध्ययन करना।
- डिजिटल युग में बालकों के व्यक्तित्व पर तकनीकी का प्रभाव का विश्लेषण करना।
- डिजिटल युग में बच्चों पर तकनीकी के प्रभाव को संतुलित और सकारात्मक बनाने के लिए सुझाव देना।

## शोध विधि व आंकड़ों का संग्रहण

डिजिटल युग में बालकों के व्यक्तित्व पर तकनीकी का प्रभावका विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों को विभिन्न पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि से इकट्ठा किया गया है।

## बच्चों द्वारा आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग

आज कल बच्चों में आधुनिक तकनीकी उपकरणों जैसे— मोबाइल फोन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, टेलीविजन, वीडियोगेम, सोशल नेटवर्किंग साइट एवं खिलौने आदि के प्रयोग की अधिक प्रवृत्ति पाई जाती है। वे साधारणतया अनेक उपकरणों के साथ हमेशा जुड़े रहते हैं। बच्चों को लगता है की ये नये उपकरण उनके जीवन का एक प्रमुख हिस्सा है। इन उपकरणों पर उनकी निर्भरता इतनी ज्यादा बढ़ गयी है कि इनके बिना बच्चों के व्यवहार में चिड़-चिड़ापन आने लगता है। वे अपने आप को अकेला और अधूरा सा महसूस करते हैं। इसके कारण बच्चों और अभिभावकों के बीच सम्बन्ध तनावपूर्ण हो जाते हैं। ऐसे बच्चे अपने सामान्य कार्यों को भी पूरी कुशलता के साथ नहीं कर पाते हैं। सामाजिक कार्यों में उनकी उपस्थिति प्रायः नगण्य होती है। उनका विद्यालयीन शिक्षा का स्तर एवं शैक्षिक प्रदर्शन भी ठीक नहीं होता है। इसका प्रमुख कारण यह है की ऐसे बच्चों के माता-पिता भी स्वयं लेपटॉप और कम्प्यूटर पर अधिक समय बिताते हैं। इस प्रकार से उनके बच्चे भी धीरे-धीरे इन उपकरणों का उपयोग करना शुरू कर देते हैं। प्रारम्भ में इनके उपयोग का समय कम रहता है परन्तु बाद में इसकी समयावधि बढ़ती जाती है और धीरे से वे इनके आदि हो जाते हैं। जब बच्चे छोटे होते हैं तो वीडियोगेम पर अधिक ध्यान देते हैं और जैसे ही किशोर अवस्था में जाते हैं इनका ध्यान सोशल नेटवर्किंग और इंटरनेट पर केंद्रित हो जाता है। इन साधनों के उपयोग का उनके स्वास्थ्य पर सकारात्मक और नकारात्मक दोन प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

## कार्टून आधारित कार्यक्रम

टेलीविजन के विभिन्न चैनलों पर दिखाए जाने वाले कार्टून आधारित कार्यक्रम आजकल बच्चों में अधिक लोकप्रिय होते जा रहे हैं। हर परिवार में कम उम्र के बच्चों में कार्टून कार्यक्रमों के प्रति एक खास ताह का आकर्षण दिखाई देता है। बच्चों में कार्टून देखने की प्रवृत्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। माता-पिता चाहकर भी उन्हें रोक नहीं पाते हैं। अधिकांश कार्टून कार्यक्रम तिलस्मी दुनिया काल्पनिक कहानियों एवं पश्चिमी देशों के परिवेश पर आधारित होते हैं। जब बच्चा कार्टून की कहानियों, चित्रों और पात्रों को देखता है उसके मन में अंध विश्वास की भावना उत्पन्न होने लगती है और हिंसा के प्रति घृणा की भावना समाप्त हो जाती है। कार्टून में तेजी के साथ बदलते दृश्य, चरित्र, स्थान आवाजें और घटनाएं उन्हें अपनी और आकर्षित करती हैं वे हिंसा को बड़े गौर से देखते हैं। जब बच्चे आक्रामक और हिंसा के कार्यक्रम देख रहे होते हैं तब उनके चेहरे पर खुशी नजर आती है। वे जिस चरित्र को पसंद करते हैं उसका प्रभाव उन पर अधिक होता है। उन बच्चों की भाषा और बोल-चाल में कार्टून के पात्रों की छबि दिखाई देने लगती है। बच्चों को प्रभावशाली चरित्र और हिंसा के कार्यक्रम ज्यादा प्रभावित करते हैं।

कार्टून कार्यक्रमों से बच्चों के मन में भय, घबराहट, असुरक्षा की भावना भी उत्पन्न हो जाती है। इन बच्चों में संवेदनशील कम होती है, परन्तु आक्रामक होने की संभावना बढ़ जाती है। बच्चों में मानसिक उत्तेजना, गुस्सा और कुंठा पैदा हो जाती है जिनका असर उन बच्चों के दिमाग पर भी दिखाई देने लगता है। तेजी से स्क्रीन पर बदलते चित्रों का उनकी आँखों के साथ कोशिकाओं पर पड़ने से उनका मानसिक विकास रुक जाता है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं प्रदर्शन निम्न स्तर का हो जाता है। प्रायः ऐसे बच्चे अकेले रहना पसंद करते हैं और अन्य बच्चों के साथ खेलना-कूदना, मिलना जुलना उन्हें अच्छा नहीं लगता है। मासूम बच्चे सांस्कृतिक संक्रमण के शिकार हो जाते हैं।

## कम्प्यूटर एवं इंटरनेट

माता-पिता अपने बच्चों को इंटरनेट का उपयोग करने के लिए इसलिए देते हैं कि वे इसका उपयोग शिक्षा के नवीन अवसर एवं नवीन तकनीकों के प्राप्त करने के लिए करेंगे, परन्तु आज उनके बच्चे पढ़ने-लिखने के बजाय, कम्प्यूटर पर गेम खेलते हैं या ऑनलाइन सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स पर चैटिंग करते हैं या ब्लॉगिंग करते हैं या

इन्टरनेट पर बिना किसी उपयोग वाली वस्तुएँ खरीदते हैं। कम्प्यूटर पर शैक्षिक अनुसंधान करने के बजाए घंटों अपने दोस्तों के साथ मेसेजिंग करने और अपरिचित लोगों से बात करने में अपना कीमती समय गंवा रहे हैं। जो बच्चे ज्यादा घुल-मिल नहीं पाते हैं वे सोशल नेटवर्किंग पर समुदाय में अपनी पहचान बनाने के लिए अवसर की खोज करते रहते हैं। इस प्रकार से बच्चों का पुरे समय ऑनलाइन, माता-पिता के लिए चिंता और चुनौती का विषय बन गया है। अधिक समय तक कम्प्यूटर से जुड़े रहने या गेम खेलने से बच्चा अपने मित्रों और साथियों से अलग होता जा रहा है। वह परिवार के सदस्यों और अपने मित्रों से झूठ बोलने लगता है और विद्यालय के कार्य या पढ़ाई से जी चुराने लगता है। अधिक समय तक कम्प्यूटर का उपयोग करने या देखने से उनकी आँखों एवं पाचन क्रिया पर बुरा असर पड़ रहा है जिसके कारण बच्चे कब्ज, अल्सर और मधुमेह जैसी बीमारियों से ग्रस्त होते जा रहे हैं और उनका स्वास्थ्य भी धीरे-धीरे खराब होता जा रहा है।

## मोबाइल फोन

मोबाइल फोन का उपयोग करने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। कुछ समय पूर्व मोबाइल फोन का उपयोग केवल बातचीत करने या शब्द सन्देश भेजने के लिए किया जाता था, परन्तु आजकल के समय में मोबाइल फोन के स्थान पर स्मार्ट फोन का चलन हो गया है। मोबाइल फोन आज के समय में शहर ही नहीं ग्रामीण क्षेत्र में भी बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों के जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। आजकल बच्चों के हाथों में सुबह से लेकर रात तक हर समय, घर हो या बाहर, पैदल चल रहे हो या बाइक पर मोबाइल ही नजर आता है। पैसा और समय की चिंता किये बिना ही ये लोग मोबाइल का उपयोग गेम खेलने, इन्टरनेट चलाने, सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने, संगीत सुनने और फिल्म देखने के लिए करते हैं। आज मोबाइल बच्चों का स्टाइल और स्टेट्स सिम्बल बन गया है।

मोबाइल फोन का ज्यादा उपयोग करने से बच्चों को कई तरह की शारीरिक और मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बच्चे अनिद्रा, थकान और चिड़चिड़ेपन का शिकार हो रहे हैं। इसके साथ ही वस्तुओं को याद न रख पाते हैं, बोलते समय शब्दों को भूल जाते हैं। सामान्यतया किसी बात पर फोकस नहीं कर पाते हैं और ना ही उसे ग्रहण कर पाते हैं। बच्चों में गणितीय क्षमता का लगातार ह्रास हो रहा है। अपनी प्राथमिकताये तय करने के लिए उन्हें दूसरों का सहारा लेना पड़ता है। उनकी याददाश्त भी कमजोर होती जा रही है। बच्चों में संवेदनशीलता की कमी आने लगी है। सामान्यतया ये बच्चे अन्य बच्चों और लोगों से मिलना और बातचीत करना पसंद नहीं करते हैं। उनके नैतिक मूल्यों में बिखराव आने लगा है। उनके दिमाग पर अपराध और बलात्कार जैसी घटनाओं का असर बढ़ता जा रहा है।

## सोशल नेटवर्किंग साइट

सामाजिक नेटवर्किंग सेवा एक ऑनलाइन सेवा या साईट है जो लोगों के बीच सामाजिक संबंधों को बनाने के लिए या बनाए रखने के लिए उपयोग की जाती है। इससे व्यक्ति जिनकी रुचियाँ और कार्य या गतिविधिया एक समान होती हैं वे एक-दूसरे से संपर्क करने, सन्देश भेजने के लिए इसका उपयोग करते हैं।

## वीडियोगेम और खिलौने

कुछ वर्षों पहले वीडियो गेम और खिलौने का उपयोग मनोरंजन करने के एक साधन के रूप में किया जाता रहा है। आधुनिकता की भाग दौड़ में माता-पिता के पास समय का अभाव होने से वे अपने बच्चों को समय नहीं दे पाते हैं जिसके कारण कुछ वर्षों से बच्चों में इन प्रयोग का प्रचलन इतना अधिक बढ़ गया है। बच्चों की घर से बाहर जाने और साथियों के साथ खेलने-कूदने की सभी प्रकार की गतिविधियां लगभग समाप्त सी हो गई है। आज बच्चे अपना और खिलौने की तरफ ज्यादा रहता है जिसके फलस्वरूप उन बच्चों में परिवार और समाज के लोगों के प्रति उनमें नकारात्मक प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

डिजिटल युग में बच्चों पर तकनीकी के प्रभाव को संतुलित और सकारात्मक बनाने के लिए सुझाव:

- **समय सीमा निर्धारित करें:** बच्चों के स्क्रीन टाइम को नियंत्रित करने के लिए समय सीमा निर्धारित करें। बच्चों को दिन में कुछ घंटे से अधिक समय तक डिजिटल उपकरणों का उपयोग न करने दें।
- **शारीरिक गतिविधियाँ बढ़ाएँ:** बच्चों को शारीरिक गतिविधियों और खेलों में शामिल करने के लिए प्रेरित करें। यह उनकी मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए फायदेमंद होगा।
- **सामाजिक संपर्कों को प्रोत्साहित करें:** बच्चों को परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करें, ताकि उनका सामाजिक विकास सही दिशा में हो सके।
- **शैक्षिक सामग्री पर ध्यान दें:** बच्चों को डिजिटल उपकरणों के माध्यम से शैक्षिक सामग्री का उपयोग करने के लिए प्रेरित करें। इससे उनका ज्ञान बढ़ेगा और वे सकारात्मक तरीके से तकनीकी का उपयोग करेंगे।
- **साक्षात्कार और संवाद बढ़ाएँ:** बच्चों से नियमित रूप से उनके डिजिटल अनुभवों पर बातचीत करें, ताकि आप यह समझ सकें कि वे इंटरनेट पर क्या कर रहे हैं और अगर कोई नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है तो उसे समय रहते ठीक किया जा सके।
- **स्मार्ट डिवाइस का चुनाव:** बच्चों के लिए ऐसे उपकरणों का चुनाव करें जो उनके लिए उपयुक्त हों और उनमें सुरक्षा फीचर्स हों, जैसे पैरेंटल कंट्रोल्ल्स और निगरानी।
- **मनोबल बढ़ाने वाली गतिविधियाँ:** बच्चों को मनोबल बढ़ाने वाली गतिविधियों में शामिल करें, जैसे पुस्तक पढ़ना, कला या संगीत में रुचि रखना, ताकि उनका मानसिक विकास भी सही दिशा में हो।

## निष्कर्ष

डिजिटल युग में तकनीकी का बच्चों के व्यक्तित्व पर गहरा और मिश्रित प्रभाव पड़ता है। जहाँ एक ओर यह बच्चों को शिक्षा, जानकारी और सामाजिक संपर्क के नए अवसर प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर अत्याधिक स्क्रीन टाइम और डिजिटल उपकरणों का निरंतर उपयोग मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। बच्चों में तनाव, अकेलापन, शारीरिक समस्याएँ, और सामाजिक संपर्कों में कमी जैसे प्रभाव देखे जा सकते हैं इसलिए, बच्चों के डिजिटल उपयोग को नियंत्रित और संतुलित रखना आवश्यक है ताकि वे तकनीकी के सकारात्मक पहलुओं का लाभ उठा सकें व इसके नकारात्मक प्रभावों से बच सकें। इस संतुलन के साथ, डिजिटल तकनीकी बच्चों के समग्र विकास में सहायक बन सकती है इसलिए जरूरी है कि बच्चों के डिजिटल उपयोग को नियंत्रित किया जाए और उनके मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास को संतुलित बनाए रखने के लिए उचित मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान किया जाए। आधुनिक उपकरणों के प्रयोग ने बालकों को अभी से ही कृत्रिम रिश्तों के ताने-बाने में उलझा दिया है। वे परिवार तथा सामाजिकरण की प्रक्रिया से दूर होते जा रहे हैं, स्वार्थ अधिक बढ़ता जा रहा है। मोबाइल फोन के अत्याधिक प्रयोग ने बालकों में कई तरह की मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। उनकी याददाश्त क्षमता में असर दिखाई देने लगा है। सोशल नेटवर्किंग साइट ने बालकों में नए सम्बन्ध बनाने की दिशा में अहम योगदान दिया है। बालक इन प्रवृत्तियों में उलझ कर रह गए हैं। उनमें नकारात्मकता भी बढ़ रही है। जो परिवार व समाज पर विपरीत प्रभाव डाल रही है।

## संदर्भ सूची

1. माथुर, एस. एस. (2011) *शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार*, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. शर्मा, ऋचा (2011) *भारत में सामाजिक समस्याएँ*, सागर पब्लिशर्स, जयपुर।
3. उदास, नरेश कुमार (2011) *बच्चे होते हैं अच्छे*, प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. दोषी, एस. एल.; एवं जैन, पी. सी. (2009) *समाजशास्त्र नई दिशाएँ*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।

5. पाठक एवं गीतकार (2008) *शिक्षा के सिद्धांत*, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. महाजन, धर्मवीर; एवं महाजन, कमलेश (2007) *भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्याएँ*, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
7. लवानिया, एम. एम.; एवं राठौड़, अजय सिंह (2007) *भारतीय समाज*, रिसर्च पब्लिकेशन्स. जयपुर।
8. बघेल, डी. एस. (2003) *अपराधशास्त्र*, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. आहूजा, राम (2000) *सामाजिक समस्याएं*, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
10. शर्मा, रजनी (2019) *डिजिटल युग में बच्चों का मानसिक और सामाजिक विकास*, शिक्षा प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. कुमार, विनोद (2020) *बालकों पर डिजिटल मीडिया का प्रभाव: एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण*, भारतीय ज्ञान संस्थान, जयपुर।
12. पांडे, आशा (2018) *तकनीकी का बच्चों के सामाजिक और मानसिक विकास पर प्रभाव*, सामाजिक विज्ञान प्रकाशन, मुंबई।
13. अग्रवाल, सुधा (2021) *डिजिटल युग में बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व विकास*, एज्यूटेक पब्लिशर, दिल्ली।
14. मिश्रा, मधु (2017) *समाज में डिजिटल तकनीकी का प्रभाव और बच्चों का मानसिक विकास*, चंद्रिका प्रकाशन, लखनऊ।
15. शेख, नदीम (2016) *बच्चों के व्यक्तित्व पर डिजिटल तकनीकी का प्रभाव*, डिजिटल एजुकेशन पब्लिकेशन, पुणे।
16. वर्मा, शिवानी (2020) *डिजिटल तकनीकी और बच्चों के विकास में उसका स्थान*, डिजिटल पब्लिकेशन, कोलकाता।
17. यादव, हेमंत (2015) *तकनीकी युग और बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य*, मानसिक स्वास्थ्य प्रकाशन, दिल्ली।
18. चौधरी, किरण (2018) *बालकों की शिक्षा में डिजिटल उपकरणों का प्रभाव*, भविष्य शिक्षा प्रकाशन, मुंबई।
19. सिंह, अनिता (2022) *डिजिटल तकनीकी के प्रभाव से बच्चों के सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन*, संकल्प पब्लिशर्स, दिल्ली।
20. रानी, प्रमिला (2019) *तकनीकी और बच्चों की मानसिकतारु एक अध्ययन*, आधुनिक शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।

\*\*\*\*\*